

॥ हव ॥

नास्य षाष्ट्यमुपेक्षा कथं ॥ नृपाद्यादिकं प्राच्य सर्ववत्तु विधिकं मे ॥ शक्तिं वदुर्लभं कुरुच कुत्र
सुखं पोष्टिकं प्रिकासीमान् ॥ सप्राकं ॥ गणाय सप्त वसा वयं ॥ एकहस्तार्द्धं हस्तैवा ॥ शार्द्धं शक्तिं कुरुच
तु ॥ विहस्तं मकहस्तं ॥ शार्द्धं पोष्टिकं मर्गं विद्यात् ॥ कुलमर्द्धं वा मर्द्धं च मात्रां सैव ॥ कुचं सैव रुचं
स्तोपीर्गं कुपोष्टिकं तथा मात्रा ॥ सप्तार्द्धं वस्तु ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ कुरुचं यथावत्तु तथा कुरुचं ॥ शार्द्धं
था मात्रा ॥ सप्तार्द्धं वस्तु ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ कुरुचं यथावत्तु तथा कुरुचं ॥ शार्द्धं वस्तु ॥

३२

॥ ३३ ॥

त्यादिकं ॥ सप्तार्द्धं वस्तु ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ कुरुचं यथावत्तु तथा कुरुचं ॥ शार्द्धं वस्तु ॥
त्यादिकं ॥ सप्तार्द्धं वस्तु ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ कुरुचं यथावत्तु तथा कुरुचं ॥ शार्द्धं वस्तु ॥
त्यादिकं ॥ सप्तार्द्धं वस्तु ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ कुरुचं यथावत्तु तथा कुरुचं ॥ शार्द्धं वस्तु ॥
प्राच्यं कुरुचं ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ कुरुचं यथावत्तु तथा कुरुचं ॥ शार्द्धं वस्तु ॥
कुरुचं यथावत्तु तथा कुरुचं ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ शार्द्धं वस्तु ॥ कुरुचं यथावत्तु तथा कुरुचं ॥ शार्द्धं वस्तु ॥

॥ हव ॥

पृथ्वीं नुदुसिलाहमवलिचन्द्रमनिपुणवचभुलोचनरुहसामाधान्वितीकप्यममता
॥ वृष्टीं दीपयुत्राश्ववेवस्यतेविनायकाहनेमहिर्वेमविमित्रगोर्थादीनीहुविष्टुर्वे
वालकैरूपयित्वाकुरुतावर्कपशुरुद्रिगशांनेवासायद्वर्गमर्तुगागालिङ्गमचन्तने
॥ मृतीवग्धकवेमर्तुइष्टसाकजतेयथावातागाकपकवेमर्तुदवास्वविमर्तुते॥
दहंकथयाम्यमगृह्यदविसृज्यददरावृक्षपूवोधिसखपमयातान्यपुमार्गकस्यमनु

५२

॥ ५३ ॥

स्ययद्वर्तवजसहस्रनयस्त्रुर्ग॥ विहसिस्तुवीदविउपशोधातुत्ययिकथार्गवामसुलेवरुषि
वाहुक्षीलातालाकलालिने॥ अरिष्टाकवजगर्हस्यदाहुंकोकोष्मिलारुमी॥ अयनजा
मनमानदीर्घनादनवान्मा॥ हवजयागमयकनकच्यकसर्वगापितशातज्जाधन
यागासाहार्वकर्मकवात्यसोहकावजयागतविमकनवगत्याधुदनामादिमैवेवाह
द्विन्द्विहृषिर्गपश्चादष्टानतायतिपिलमईकाभवर्त्यवचचुर्विमर्तितजायतदनपा

॥ हव ॥

विजयं कलमी गताद या लवा गै सवस्मि नी पयः प्रताद र दिवी मालि जे ४ प वि प वि री रा
किं वरू ना पु ला ध न य था त व स्य सै ग ह म सु ल वि वि स थ क रू वी ॥ म सु ल च पु व रू वा वि श्या
स शो महा स रू ४ द्वा द श ॥ दि द्वि व रू च स व स पु व रू पि ता शे क न ती रू गि ती च व रू हि ता रू ग त पि
का ॥ म रू व स्य क था रू गी ता रू गी ती च व रू का रू पि रू रू गि ती रू थ च व रू रू वि श्या ४ पु की रू हि ता श्या
न रू सी प रू य श्या गी गा दो लो ग स च व रू ने ४ क रू य रू व पि व रू रू क न म सु ल पा क न श्या सी पा व रू य

३१

श्या रू ल य सि द्वि स वा प्र या ता स द रू न ग रू प ता रू वी रू क रू य च रू सा लि जे ती च वि व स्मि का क रू ता रू
गै च रू म य रू म रू रू ४ ना लि श्या क रू व रू ली गी य रू न रू य रू प रू ॥ श्री की ज कि य रू क रू व रू ल क रू
ल या ग रू ४ प रू अ द्वि ती य रू प रू रू सि य रू क रू पु व रू य रू रू न रू द्वि पु रू य रू व रू म स प रू आ स रू ल द रू
नी ॥ न रू हि रू व रू दी य रू क रू नि रू मी रू थ वि रू न रू ग रू य रू थ क रू थि ता रू रू म क रू आ रू य रू दि पु रू
द रू ४ म रू क रू पि य रू थ रू य रू ता पा गु रू य रू स रू सि य रू क रू ४ क रू व रू य रू य रू रू वि व रू मा दि य रू मा क

॥ हव ॥

है ॥ एतत्पितृ सर्वतनुषु न कर्म न पुकारि ॥ पृच्छते तनुदेवी च वज्रपुष्पापयागतशा कुरुते
कोटि सैदव कथयस्व महापुला ॥ हगवात्ता हगवात्ता वीत न कुरुते मय्युहित उरुवत उ निवृत्ति
४८ कसोपवम महासुहृत्त उ पयस्य उ मया न ॥ स्वसंयत यथा ॥ सनुद्विजा वातासिका चया ॥
तापीपुपी उ यथा गिरीं हा एतत्तु द्वयं ॥ पश्चात्त्य शत शतं क्रमादिसूयते यथा ॥ किमप्य
त्यशतं तनु मकस्य स्वप्रेयथा ॥ पत्रमा कर्कस ॥ विप्रमस्य मृत्वा भूतनु हवर्क ॥

५२

५३

मिथी हवजगत्तु हवजात्य दुयं ४ पश्चात्त मपटल ४ ॥ पश्चात्त मपटल ४ ॥ १५ ॥ ॥ देवी
वेता न मालिगि किं ह्यावाले क कालक ॥ मभर्तुं कच गृहं कला सुव्या तत्र नासिका ॥ दभर्तुं ता
मापीश्वरुं कला तत्र कर्तुं ॥ संपूर्णं सौंवा मासा य पश्चात्त मपटल पुकारि ॥ गुर्वी वार्य सुदव
त्यत नार्थं वक्रिया हता ॥ इति पश्चात्त यव सया ४ क सुले वार्य वक्तुं फलं चर्क थिका ॥ चचक ४
या सिर्वी ह क मडो ही जिरु ४ म प्रली ॥ पश्चात्त मपटल ४ मडो ही मडिती सदा ॥ पृहत्त क

॥ हव ॥

१ कृत्वा दत्ते १ संपद्यथा धर्मं ॥ यच्छुभं तत्तु सा दवी हवर्जं सहजं पिने कतं च न विधानेन कया कि
यया तथैव ॥ हवर्जस्य पटं कार्यं कथयस्व महामुखा ॥ रुगवान्नाह ॥ समपि विरुक्तं न हस्ताय
काना पिसमपि ना ॥ लिखितं च पटं धार्यं नरकं ॥ ४ पचश्चर्कं के १ सा पके ४ सा कर्त्री च लिखितो
यं पटलं गुर्वं ॥ स पुनैव यया कार्यं करुर्वै च पटं यया कया पिसमपि न्या ॥ १ समयो विज्ञाते याग
तं १ ॥ इति वै सदैव सा कृत्वा विजते गृह ॥ मन्त्रा न कुर्वन् विरुक्तं किंचित् सद न पात न १ ॥ १

५३

॥ १ ॥

निर्यसक आवात ग्रीरुयसु था पत १ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ हं व ॥

हं ॥ रुद्रपुत्रं लिखितं स यो द्वा दशांशुतपस्तु कं ॥ महासधमसिंहं कृत्वा लेश्वर्या मानवाश्चिह्निष्य
स्तु कथं पटस्त्रे वयं दिवा इव पश्यति ॥ वृद्धं नमिने सिद्धिं श्रुत्वा नृवापव लोकं ॥ गमच व
॥ संप्रदायय कस्य दर्शनं वरकदा विहगा ॥ गमपि नवी कथं कथं कथं कथं ॥ गमच व ॥ रुद्रगिलिगी पुनि
ष्टाये वच्यं यि त्वा मर्द्धं मर्द्धं ॥ महासुखं समासा श्रवडी ला जत मादि ला गम मृदु देवी विमा ला
की ला जत गस म सुखं गय रुद्र कं रुद्रे सिद्धिं श्रुत्वा सर्व का मा र्थ साधकी ॥ गम गम न गि त्रि कं कं वा म

३४

॥ ५ ॥

नृपस्य प्रगता ॥ अथ वा विजतं श्रुत्वा कं कं दं ला जत मा च व ॥ गम कल्यय दा सते रुद्र त वा र्थी वा
वत्र पि क्षी ॥ अथ वा व्या यु च मी च रुद्र म मा त क र्ण म ॥ मा अ हं वे ज न पा सा या गि नी नी त का त्प म
ह ॥ सु नै हा ला य था प र्व दि क्षा सु वि दि क्षा सु च ॥ व्या यु च मी पे त्रि डु डी त स म य स मा ल ती च
ने ग रु कं च रुद्र प त रुद्रा ज गालि पु य त रुद्रा रुद्रा रुद्रा प त रुद्र प य रुद्र रुद्र मा रुद्र ॥ यदि वा
मा ता रुद्रि नी ला ग न यी व र्ध रुद्रा ॥ पञ्च ये त्रि रुद्रै ता सा सि ध कं ग स म सु खं ॥ न क रुद्र रुद्र म हा न रुद्र

॥ हं व ॥

कौदिवां मदतपत्रिर्गं ॥ गुद्वेदश्यामहा एव न्ययि स्वाख्यं विवत ॥ गृहीयात्प्रहस्तनदशारु
नेव पाक्षिनाम हर्म ह ४ पुसा मन्त्र कर्त्तुं कि त्तु साधका ४ ॥ ॥ वं कि श्री हवे ज रुतु लो कृत य
हल सफ म ४ म ह्वा द स म व्या य ४ ॥ १८ ॥ ॥ त्तु पृष्ठु कि या गित्य स ह म् ज दु की ह्मी से च
ल वा प्र वृ प स क थ य ख स र्वे द द ॥ त्तु वा न्ना ह ॥ ना कि दी र्घा ता कि ज्वा त व रु फ्रु त ए गो त्रिका ॥ प
प्र पृष्ठु निरु का वा श स क्त्वा ४ स र्ग व र्क पु स्त र्च स ग धि ४ स्ता स्ता गा ता हि स म पु र्ण य प्र व न्दी व न्

३३

॥ ५ ॥

गं वे सा त्प म् मि वा च न्ना क र्प्य र्म सि क्त्वा त्त्वा ४ स र्ग व ल क्त य द्ध ४ उ त्प ल स र्ग व द्ध र्च वा य सा गु द म
त्रि र्गं ॥ श्री ग न्त्र च र्वा लो च व पि य वा दि म न्ना य मा ॥ स क्त्वा पि व लो म व्या प्रो क्त र्ग ४ प श्री ती म न्ना र्वा च
सा ध र्ग व त्ति डि स ह्वा त न्द्र पि ती ॥ अथा ह न्ने ग ल्ता यो गितो रु ग व न्द्रु सि वा न्ने की ह्मी क र्ह वी ॥ रु
ग वा न्ना ह ॥ क ल ज्मा च ज्मा दी स म यी ह्वा ज्द द्ध क ४ रु पा वा न्नु व रु क्त्वा रु व र्च ज्मा २ ति व ज्
य स्या त्त्वा सि र्ग म् न्ना य र्म पा ० क ४ यो पि ह्वा स मा हा त्रि र्ग व र्च ज्मा २ ति ॥ त्तु पृष्ठु रु सा

॥हव॥

दवीर्ण्यवचनमववीह॥ इहो नाइइरा४सखा विसर्यया किकेतहि॥ रुगवान्नाह॥ पाषर्ध दीय
तपुधर्मदत्तमिआपददठोवे हाषीतपुदं हातसुजाकं वेपतकथा॥ योगमवावेतग ४पश्चक
दत्तसखामकं दिखत॥ सर्वमकुनयैहालातदत्तहवजमावहृत्॥ एकीयासादवीसिष्यसिष्य
तनाउसंशय४॥ ॥००॥ ति श्रीहवजककुचिभयपटलातामपुम४उतर्वित्तिकमव्यायशा
१२ गत्रथात४सैपवओमिहैयेगोचातलकनविज्ञातमापुससाधक४सिद्धिमाप्रयात्॥ सा

३३

॥५॥

अस्यताहिमलहुहकतायादयदुति॥ हवकपुतिर्यासातनारखाककुवचतसा॥ लावतामापुकने
वडापितेव्यहकुवे॥ मोत्रसेकियहकपयाअवपित्वापुगोमनो॥ मासनायापकादीचपुन
कडस्यजासकमयकुदस्यथात्रपमखासर्वाहावयेतुवाचकमदसर्कवेवकमपयकंसमठ
जीगहोगार्गसर्विआयात्युविभक्तिवक्रिद्विपीसीराहृदयहतासनेवीडं दृष्टमाप्रयहृद
सात॥ अस्तिनगुतहातवीमडावचक्रियानच॥ यणिकहिडं महातनुव्यानसापुमसिद्धि

॥ हं व ॥

॥ ग्रहस्य पुत्रस्य वरुणश्च सुदुर्लभः ॥ वरुणस्य पुत्रस्य वरुणश्च सुदुर्लभः ॥
लं कालमासदत्र वपुः ॥ अथाग्राहसादविहृतविहृतसुतितयायकश्च दत्तं सात्रकं नर्तपत्रकामपुरस्य न
मविभूतं विषतीयाति विहृतश्च पीयूषवहं वरुणस्य सात्रकं नर्तकाकारं जगद्गुरुं पुरुषं ॥ यतनपते
संस्तुतं दहं वस्तिगुह्यं ॥ कृपया लोचनत्रकं कृष्णं ॥ अमेरुविरुहं ॥ अमेरुगहवकुचकुचं तचत्वा
वधनं ॥ ४५ ॥ अथाग्राहसादविहृतविहृतसुतितयायकश्च दत्तं सात्रकं नर्तपत्रकामपुरस्य न

३०

॥ ५ ॥

आर्य समाज	K. Y.	3800
-----------	-------	------